महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के सेवापूर्व अध्यापकों का नागरिकता की शिक्षा के प्रति दृष्टिकोणः एक अध्ययन

*सर्वेश तिवारी**

शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास का आधार एवं जीवन का सम्पूर्ण शास्त्र है। शिक्षा सामाजिक उद्देश्य की पूर्ति का एक सामाजिक साधन है, जिससे समाज अपने ही अस्तित्व को सुनिश्चित करता है। इसका उद्देश्य ज्ञान–पिपासा जगाने के साथ ही व्यक्ति को संस्कारी, विचारवान और संयमी प्राणी बनाना है। इसका उद्देश्य एक ऐसे नागरिक का निर्माण करना है जो अपने दायित्वों का निर्वहन स्वतन्त्र रूप से कर सके और समाज में नवचेतना का संचार कर मानवीय मूल्यों को स्थापित करने में सक्षम हो।

वर्तमान समय में व्यक्ति पूर्णतः भौतिकवादी हो गया है। वह अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए दूसरों की स्वतन्त्रता एवं अधिकारों का हनन करने से भी पीछे नहीं हट रहा है। वह समाज एवं राष्ट्र की उन्नति से नहीं अपितु केवल व्यक्तिगत उन्नति से सरोकार रखना चाहता है। ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति में अपने समाज एवं राष्ट्र के प्रति जागरुकता लाना आवश्यक प्रतीत होता है, जिससे कि भविष्य में और अधिक विकट स्थिति का सामना न करना पड़े। इसके लिए व्यक्ति को उसके अधिकारों तथा समाज एवं राष्ट्र के प्रति उसके कर्तव्यों से परिचित कराना आवश्यक है, जो नागरिकता की शिक्षा द्वारा सम्भव हैं। किसी भी राष्ट्र के भविष्य का निर्माण उसके विद्यालय की कक्षाओं में होता है और उन कक्षाओं के छात्र राष्ट्र के भविष्य निर्माता होते हैं। अतः समाज एवं राष्ट्र के प्रति छात्रों में जागरूकता लाने हेतु नागरिकता की शिक्षा पर विद्यालयों में अधिक बल दिया जाना चाहिए। अध्यापक के व्यक्तित्व एवं विचारों का छात्रों के ऊपर अमिट प्रभाव पड़ता है तथा छात्रों के विकास एवं विचारों के निर्माण में अध्यापक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः अध्यापकों में नागरिकता की शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास आवश्यक है।

इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए ही प्रस्तुत शोध में यह जानने का प्रयास किया गया है कि सेवापूर्व अध्यापकों में नागरिकता की शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण क्या है? इसके अन्तर्गत विभिन्न वर्गों यथा–विज्ञान व कला वर्ग तथा नियमित व स्ववित्तपोषित वर्ग के सेवापूर्व अध्यापकों में नागरिकता की शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

---

* शोध–छात्र, शिक्षाशास्त्र, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

अध्ययन का उद्देश्य:

1) महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ की बी0एड0 कक्षा के नियमित एवं स्ववित्तपोषित वर्ग के सेवापूर्व अध्यापकों में उनके नागरिकता की शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2) महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ की बी0एड0 कक्षा में विज्ञान वर्ग एवं कला वर्ग से आये हुए सेवापूर्व अध्यापकों में नागरिकता की शिक्षा के प्रति उनके दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना:

1) महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ की बी0एड0 कक्षा के नियमित एवं स्ववित्तपोषित वर्ग के सेवापूर्व अध्यापकों का नागरिकता की शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं है।
2) महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ की बी0एड0 कक्षा में विज्ञान वर्ग एवं कला वर्ग से आये हुए सेवापूर्व अध्यापकों का नागरिकता की शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन विधि:

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में विश्वविद्यालय (महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी) के चयन हेतु सोद्देश्य प्रतिदर्श चयन विधि का प्रयोग किया गया। विश्वविद्यालय से 150 सेवापूर्व अध्यापकों का चयन गुच्छ प्रतिदर्श चयन विधि द्वारा किया गया।

प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों के संकलन हेतु स्व–निर्मित 'नागरिक मौलिक कर्त्तव्य दृष्टिकोण मापनी' का प्रयोग किया गया।

परिणाम एवं व्याख्या :

एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी0 मान प्रविधियों का प्रयोग किया गया।एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषणोपरान्त जो परिणाम प्राप्त हुए, वे निम्नलिखित है:–

सारणी–1 नियमित एवं स्ववित्तपोषित वर्ग के सेवापूर्व अध्यापकों का नागरिकता की शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक विवरण

क्र0सं0	सेवापूर्व अध्यापको का वर्ग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी0मान (t)
1.	नियमित	75	63.83	7.92	0.44
2.	स्ववित्तपोषित	75	63.28	7.43	

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि नियमित वर्ग के सेवापूर्व अध्यापकों का मध्यमान 63.83, स्ववित्तपोषित वर्ग के सेवापूर्व अध्यापकों का मध्यमान 63.28 एवं टी0मान 0.44 है जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः यह कहा जा सकता है कि नियमित एवं स्ववित्तपोषित वर्ग के सेवापूर्व अध्यापकों में नागरिकता की शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं है।

विज्ञान एवं कला वर्ग से आये हुए सेवापूर्व अध्यापकों में नागरिकता की शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु भी टी0मान की गणना की गयी।

सारणी–4 विज्ञान एवं कला वर्ग के सेवापूर्व अध्यापकों का नागरिकता की शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक विवरण

क्र0सं0	सेवापूर्व अध्यापकों का वर्ग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी0मान (t)
1.	विज्ञान	60	63.42	7.44	0.01
2.	कला	90	63.44	8.47	

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि विज्ञान वर्ग के सेवापूर्व अध्यापकों का मध्यमान 63.42, कला वर्ग के सेवापूर्व अध्यापकों का मध्यमान 63.44 एवं टी0मान 0.01 है। जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इससे यह ज्ञात होता है कि विज्ञान वर्ग एवं कला वर्ग के सेवापूर्व अध्यापकों के नागरिकता की शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं है।

परिणामतः यह कहा जा सकता है कि नियमित एवं स्ववित्तपोषित वर्ग के सेवापूर्व अध्यापकों में नागरिकता की शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं है। इसका तात्पर्य है कि सेवापूर्व अध्यापकों का नागरिकता की शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण पर उनके नियमित एवं स्ववित्तपोषित वर्ग के होने का कोई प्रभाव नहीं है। विज्ञान एवं कला वर्ग के सेवापूर्व अध्यापकों में नागरिकता की शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं है। इसका तात्पर्य है कि सेवापूर्व अध्यापकों में नागरिकता की शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण पर उनके विज्ञान एवं कला वर्ग से होने अर्थात् उनकी शैक्षिक पृष्ठभूमि का कोई प्रभाव नहीं है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

वेस्ट, जे0डब्ल्यू0(1986):– रिसर्च इन एजुकेशन, फिफथ एडिशन, प्रिंट्स हाल इन इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड, नईदिल्ली,

विरजिया, सेच्चिनी, हैरिसन, क्रेक,स्पैजिक :– टूल फार क्वालिटी एस्योरेन्स ऑफ एजुकेशन फार डेगोक्रेटिक सिटिजनशिप इन स्कूल्स, यूनेस्को, 2005

पाण्डेय, के0पी0(1999) :– शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकीय प्रयोग, अमिताश प्रकाशन मेरठ, चतुर्थ संस्करण,

वर्मा, आर0जी0(1996) :– शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा,

सिंह, अरुण कुमार(2004):– मनोविज्ञान, समाजशास्त्र एवं शिक्षा में शोध–विधियाँ मोतीलाल बनारसी दास, पटना प्रकाशन,